चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	04-09-23	03	1-3

हकृवि की विकसित सरसों की किस्म सुधारेगी सेहत

अमित धवन • हिसार

- आरएच 1706- हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की सरसों की पहली उच्च तेल गुणवत्ता वाली किस्म
- तेल में इरूसिक अम्ल की मात्रा दो प्रतिशत से कम होने व तेल की मात्रा 38% होने से किसानों को लाभ

लोगों के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) के विज्ञानियों ने उच्च गुणवत्ता युक्त सरसों का बीज तैयार किया है। सरसों की इस संवर्धित किस्म आरएच-1706 में इरूसिक अम्ल दो प्रतिशत से भी कम है। तेल की मात्रा अधिक होने के कारण किसानों के लिए आर्थिक दृष्टि से भी यह तेल फायदेमंद होगा। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एसके पाहुजा ने बताया कि जो सरसों का तेल घरों में प्रयोग किया जाता है उसमें इरूसिक अम्ल ज्यादा होता है। यह हृदयरोगियों के लिए अच्छा नहीं है। इसे देखते हुए विज्ञानियों ने रिसर्च कर इस बीज को तैयार किया है, जो उत्पादन बढ़ाएगा और स्वास्थ्य के लिए काफी लाभदायक होगा।

हकृवि की तरफ से तैयार सरसों की आरएच-1706 किस्म 136 से 142 दिनों में पककर तैयार होती है तथा औसतन 10.5 से 11.5 क्विंटल प्रति एकड़ पैदावार देती है। इसके पौधों की ऊंचाई मध्यम होती है व शाखाओं की संख्या ज्यादा होती है। इसमें तेल की मात्रा लगभग 38 प्रतिशत है। आम सरसों में तेल की मात्रा करीब 30 प्रतिशत होती है। इससे आम आदमी को फायदा होगा साथ ही किसानों की आमदनी भी बढ़ेगी।

हकृवि की तरफ से विकसित सरसों की नई किस्म। • सौजन्य : हकृवि विज्ञानियों की तरफ से उपलब्ध

30 सितंबर से बिजाई का समय

नई सरसों का बीज किसानों को जल्द उपलब्ध करवाया जाएगा। किसान इस फसल की बिजाई 30 सितंबर से 20 अक्टूबर के बीच कर सकते हैं। इसमें सिंचाई वाले क्षेत्र में प्रति एकड़ में सवा किलोग्राम बीज डाला जा सकेगा।

विश्वविद्यालय किसानों के लिए लगातार अधिक उपज व उच्च गुणवत्ता की नई विकसित कर रहा है। पिछले दो वर्षों में विवि ने 18 उच्च स्तर की किस्में किसानों तक पहुंचाई है। सरसों की इस किस्म से निकलने वाला तेल मनुष्य को स्वस्थ रखेगा साथ ही किसानों की आय भी बढ़ेगी। -प्रो. बीआर काम्बोज, कुलपति, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	03-09-23	03	2-5

मोबाइल एप के जरिये वैज्ञानिक करेंगे किसानों की समस्याओं का समाधान

हकृवि में दो दिवसीय कार्यशाला संपन्न, सरसों की दो, गन्ने व मक्का की एक-एक किस्म की सिफारिश

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव सुधीर राजपाल ने कहा कि किसानों की समस्याओं का जल्दी निवारण करने के लिए कृषि विभाग मोबाइल एप विकसित करा रहा है। जिससे किसान वैज्ञानिकों से सीधे तौर पर जुड़कर समस्याओं का समाधान ले सकेंगें। कृषि अधिकारी किसान के खेत पर लगे हुए प्रदर्शन प्रक्षेत्र की वीडियो बनाकर भी अन्य किसानों के साथ शेयर करें। गन्ने की अधिक पैदावार देने वाली किस्मों के बारे अधिक जागरूकता फैलाएं। प्रोत्साहन राशि देकर उनका रकबा बढ़ाने के लिए प्रयास करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित दो दिवसीय राज्यस्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ। मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज रहे। विशिष्ट अतिथि अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग सुधीर राजपाल व कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के महानिदेशक डॉ. नर हरि बांगड़ मौजूद रहे। इस कार्यशाला में प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार-विमर्श किया गया।

हकृवि में आयोजित दो कार्यशाला में मौजूद अधिकारीगण। स्रोत विवि

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के तालमेल से ही किसान का भला हो सकता है। हरियाणा एक ऐसा प्रदेश है जहां कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक व प्रदेश के कृषि अधिकारियों की कार्यशाला आयोजित की जाती है जिसमें किसान के खेत में आई समस्या के समाधान के लिए कृषि अधिकारी अपनी बात वैज्ञानिकों के पास लेकर जाते हैं तथा वैज्ञानिक इन समस्याओं के अनुरूप ही अपनी शोध कार्य प्लान करके चलते हैं। कुलपति ने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे कम जोत के किसानों की समस्या को पहले अच्छे ढंग से समझे, उसके बाद उन समस्या के निवारण पर शोध करें।

इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. नरहरि बांगड़, हमेटी के डायरेक्टर डॉ. हरदीप सिंह भी उपस्थित रहे। डॉ. सुनील ढांडा ने इस कार्यशाला में मंच संचालन कर सभी उपस्थित अधिकारियों व वैज्ञानिकों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

ये सिफारिशें स्वीकृत की गईं

- आर.एच 1424 : राया की यह किस्म जम्मू, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राजस्थान के बारानी क्षेत्रों में समय पर बिजाई के लिए वर्ष 2023 में अनुमोदित की गई है। यह किस्म 137-140 दिनों में पककर तैयार हो जाती है तथा 10.5-11.0 क्विंटल प्रति एकड़ औसत पैदावार देती है। इसकी फलिया लंबी व मोटी होती है व इसके दानों का आकार भी बड़ा होता है। इस किस्म में तेल की औसत मात्रा 40.5 प्रतिशत है।
- आर.एच. 1705 : यह विश्वविद्यालय की राया की पहली तेल गुणवत्ता युक्त उन्नत किस्म है, जिसकी वर्ष 2023 में जम्मू, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बिजाई के लिए सिफारिश की गई है। यह किस्म 136-142 दिनों में पक कर 10.5-11.5 क्विंटल प्रति एकड़ औसत पैदावार देती है। इस किस्म के दानों में तेल की औसत मात्रा 38.0 प्रतिशत है।
- गन्ने की फसल में टॉप बोरर व अर्लिशूट बोरर को नियंत्रित करने वाले कीटनाशक, जिसका नाम पहले राइनास्पिर 20ईसी (कोराजन) से बदलकर क्लोरनट्रानिलिप्रोल 18.5 एस.सी (कोराजन) हो गया है।
- मक्का की संकर किस्म एच एच एम -1 में मेडिश लीफ ब्लाइट व रतुआ की समस्या बढ़ने से इस किस्म को समग्र सिफारिशों से हटाया गया है, जिससे कि किसान इसको न लगाए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	03-09-23	05	2-8

किसानों की समस्याओं को समझकर करें अनुसंधान : प्रो. काम्बोज

हिसार, 2 सितम्बर (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज रहे, जबकि विशिष्ट अतिथि अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कुलपति महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल सुधीर राजपाल व महानिदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग डॉ. नरहरि बांगड़ मौजूद रहे। इस कार्यशाला में प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आहवान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के तालमेल से ही किसान का भला हो सकता है। हरियाणा एक ऐसा प्रदेश है जहां कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक व प्रदेश के कृषि अधिकारियों की कार्यशाला आयोजित की जाती है जिसमें किसान के खेत में आई समस्या के समाधान के लिए कृषि अधिकारी अपनी बात वैज्ञानिकों के पास लेकर जाते हैं तथा वैज्ञानिक इन समस्याओं के अनुरूप ही अपनी शोध कार्य प्लान करके चलते है ताकि ये समस्या दोबारा न आए व किसान की आमदनी बढ़े। कुलपति ने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे कम जोत के किसानों की समस्या को पहले अच्छे ढंग से समझे, उसके बाद उन समस्या के निवारण पर शोध करें। अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कुलपति महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल सुधीर राजपाल ने कहा कि किसानों की समस्याओं का जल्दी निवारण होना चाहिए, जिसके लिए कृषि विभाग ऐसी मोबाईल एप विकसित करने में लगा है, जिससे कि किसान जल्दी से वैज्ञानिकों से सीधे तौर पर जुड़कर अपनी समस्याओं का समाधान ले सकें। इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. नरहरि बांगड़, हमेटी के डायरेक्टर डॉ. हरदीप सिंह भी उपस्थित रहे। डॉ. सुनील ढांडा ने इस कार्यशाला में मंच संचालन कर सभी उपस्थित अधिकारियों व वैज्ञानिकों का धन्यवाद ज्ञापित किया इस कार्यशाला में रबी मौसम की फसलों पर निम्नलिखित सिफारिशें स्वीकृत की गई। आर.एच 1424 : राया की यह किस्म जम्मू, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राजस्थान के बारानी क्षेत्रों में समय पर बिजाई के लिए वर्ष 2023 में अनुमोदित की गई है। यह किस्म 137-140 दिनों में पककर तैयार हो जाती है तथा 10.5-11.0 क्विंटल प्रति एकड़ औसत पैदावार देती है। इसकी फलिया लंबी व मोटी होती है व इसके दानों का आकार भी बड़ा होता है। इस किस्म में तेल की औसत मात्रा 40.5 प्रतिशत है।

हकृवि में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में मौजूद अधिकारीगण।

गन्ने की फसल में टॉप बोरर व अर्लिशूट बोरर को नियंत्रित करने वाले कीटनाशक, जिसका नाम पहले राइनास्पिर 20ईसी (कोराजन) से बदलकर क्लोरनट्रानिलिप्रोल 18.5 एस.सी (कोराजन) हो गया है। मक्का की संकर किस्म एच एच एम -1 में मेडिश लीफ ब्लाइट व रतुआ की समस्या बढ़ने से इस किस्म को समग्र सिफारिशों से हटाया गया है, जिससे कि किसान इसको न लगाए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	03-09-23	03	4-8

कम जोत वाले किसानों की समस्याओं को समझकर करें अनुसंधान : प्रो. काम्बोज

हकृवि में 2 दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला संपन्न

हिसार, 2 सितम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित 2 दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज रहे, जबकि विशिष्ट अतिथि अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कुलपति महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल सुधीर राजपाल व महानिदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग डॉ. नरहरि बांगड़ मौजूद रहे। इस कार्यशाला में प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया।

हकृवि में आयोजित 2 दिवसीय राज्यस्तरीय कार्यशाला में मौजूद अधिकारीगण।

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आहवान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के तालमेल से ही किसान का भला हो सकता है। कुलपति ने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे कम जोत के किसानों की समस्या को पहले अच्छे ढंग से समझे, उसके बाद उन समस्या के निवारण पर शोध करें।

मोबाइल एप से जुड़ सकेंगे किसान व वैज्ञानिक

अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कुलपति महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल सुधीर राजपाल ने कहा कि किसानों की समस्याओं का जल्दी निवारण होना चाहिए, जिसके लिए कृषि विभाग ऐसी मोबाइल एप विकसित करने में लगा है, जिससे कि किसान जल्दी से वैज्ञानिकों से सीधे तौर पर जुड़कर अपनी समस्याओं का समाधान ले सकें।

उन्होंने कहा कि इनमें यह एप इस तरह डिजाइन की जाएगी कि जल्दी से किसान जल्दी से समस्या व इससे संबंधित निवारण के लिए विडियो भी ढूंढ सकें। ए.सी.एस. ने यह भी सुझाव दिए कि कृषि अधिकारी किसान के खेत पर लगे हुए प्रदर्शन प्रक्षेत्र की वीडियो बनाकर भी अन्य किसानों के साथ शेयर करें। उन्होंने गन्ने की अधिक पैदावार देने वाली किस्मों के बारे अधिक जागरूकता फैलाने के साथ ही प्रोत्साहन राशि देकर उनका रकबा बढ़ाने की बात कही। इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. नरहरि बांगड़, हमेटी के डायरैक्टर डॉ. हरदीप सिंह भी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	03-09-23	05	4-8.

समारोह • हकृवि में दो दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला के समापन अवसर पर बोले वाइस चांसलर

कम जोत वाले किसानों की समस्याओं को समझकर करें अनुसंधान

नई शोध की गई सिफारिशें किसानों तक पहुंचाने का आह्वान

भास्कर न्यूज़ | हिसार

कृषि वैज्ञानिक कम जोत के किसानों की समस्या को पहले अच्छे ढंग से समझें, उसके बाद उन समस्या के निवारण पर शोध करें। यह बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला के समापन समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कही।

उन्होंने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के तालमेल से ही किसान का भला हो सकता है। हरियाणा एक ऐसा प्रदेश है जहां कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक व प्रदेश के कृषि अधिकारियों की कार्यशाला आयोजित की जाती है जिसमें किसान के खेत में आई समस्या के समाधान के लिए कृषि अधिकारी अपनी बात वैज्ञानिकों के पास लेकर जाते हैं तथा वैज्ञानिक इन समस्याओं के अनुरूप ही अपनी शोध कार्य प्लान करके चलते है ताकि ये समस्या दोबारा न आए व किसान की आमदनी बढ़े।

कृषि वैज्ञानिकों और अधिकारियों की वर्कशॉप में उपस्थित मुख्य अतिथि वीसी प्रो. बीआर काम्बोज।

कृषि संबंधित समस्याओं के निवारण के लिए मोबाइल एप से जुड़ सकेंगे किसान व वैज्ञानिक : एसीएस सुधीर राजपाल

अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कुलपति महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल सुधीर राजपाल ने कहा कि किसानों की समस्याओं का जल्दी निवारण होना चाहिए, जिसके लिए कृषि विभाग ऐसी मोबाइल एप विकसित करने में लगा है, जिससे कि किसान जल्दी से वैज्ञानिकों से सीधे तौर पर जुड़कर अपनी समस्याओं का समाधान ले सकें। उन्होंने कहा कि इनमें यह एप इस तरह डिजाइन की जाएगी कि जल्दी से किसान जल्दी से समस्या व इससे संबंधित निवारण के लिए वीडियो भी ढूंढ सकें। इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. नरहरि बांगड़, हमेटी के डायरेक्टर डॉ. हरदीप सिंह भी उपस्थित रहे। डॉ. सुनील ढांडा ने इस कार्यशाला में मंच संचालन कर सभी उपस्थित अधिकारियों व वैज्ञानिकों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यशाला में रबी मौसम की फसलों पर निम्नलिखित सिफारिशें स्वीकृत की गई

- आर.एच 1424 : राया की यह किस्म जम्मू, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राजस्थान के बारानी क्षेत्रों में समय पर बिजाई के लिए वर्ष 2023 में अनुमोदित की गई है। यह किस्म 137-140 दिनों में पककर तैयार हो जाती है तथा 10.5-11.0 क्विंटल प्रति एकड़ औसत पैदावार देती है। इनकी फलिया लंबी व मोटी होती है व इसके दानों का आकार भी बड़ा होता है। इस किस्म में तेल की औसत मात्रा 40.5 प्रतिशत है।
- आर.एच. 1705 : यह विश्वविद्यालय की राया की पहली तेल गुणवत्ता युक्त उन्नत किस्म है, जिसकी वर्ष 2023 में जम्मू, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बिजाई के लिए सिफारिश की गई है। यह किस्म 136-142 दिनों में पक कर 10.5-11.5 क्विंटल प्रति एकड़ औसत पैदावार देती है। इस किस्म के दानों में तेल की औसत मात्रा 38.0 प्रतिशत है।
- गन्ने की फसल में टॉप बोरर व अर्लिशूट बोरर को नियंत्रित करने वाले कीटनाशक, जिसका नाम पहले राइनास्पिर 20ईसी कोराजन से बदलकर क्लोरनट्रानिलिप्रोल 18.5 एस.सी कोराजन हो गया है।
- मक्का की संकर किस्म एच एच एम -1 में मेडिश लीफ ब्लाइट व रतुआ की समस्या बढने से इस किस्म को समग्र सिफारिशों से हटाया गया है, जिससे कि किसान इसको न लगाए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	03-09-23	08	4-5

'कृषि वैज्ञानिकों व अधिकारियों के तालमेल से होगा किसानों का भला'

हिसार स्थित हकृवि में आयोजित दो दिवसीय राज्यस्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में मौजूद अधिकारी। -हप

हिसार, 2 सितंबर (हप्र)

चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित 2 दिवसीय राज्यस्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का शनिवार को समापन हो गया। इसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज रहे, जबकि विशिष्ट अतिथि अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कुलपति महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल सुधीर राजपाल व महानिदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग डॉ. नरहरि बांगड़ मौजूद रहे। प्रो. काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों का आह्वान किया कि शोध की नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा।

उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के तालमेल से ही किसान का भला हो सकता है। इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. नरहरि बांगड़, हमेटी के डायरेक्टर डॉ. हरदीप सिंह भी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	03-09-23	05	1

कार्यशाला आयोजित

हिसार (सच कहूँ/श्याम सुन्दर सरदाना)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ। इस दौरान मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज रहे, जबकि विशिष्ट अतिथि अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कुलपति महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल सुधीर राजपाल व महानिदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग डॉ. नरहरि बांगड़ मौजूद रहे। कार्यशाला में प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया।

	चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	02.09.2023	--	--

हकृवि में दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला संपन्न

कम जोत वाले किसानों की समस्याओं को समझकर करें अनुसंधान : बी.आर. काम्बोज

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज रहे, जबकि विशिष्ट अतिथि अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कुलपति महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल सुधीर राजपाल व महानिदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग डॉ. नरहरि बांगड़ मौजूद रहे। इस कार्यशाला में प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया।

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के तालमेल से ही किसान का भला हो सकता है। हरियाणा एक ऐसा प्रदेश है जहां कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक व प्रदेश के कृषि अधिकारियों की कार्यशाला आयोजित की जाती है जिसमें किसान के खेत में आई समस्या के समाधान के लिए कृषि अधिकारी अपनी बात वैज्ञानिकों के पास लेकर जाते हैं तथा वैज्ञानिक इन समस्याओं के अनुरूप ही अपनी शोध कार्य प्लान करके चलते हैं ताकि ये समस्या दोबारा न आए व किसान की आमदनी बढ़े। कुलपति ने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे कम जोत के किसानों की समस्या को पहले अच्छे ढंग से समझे, उसके बाद उन समस्या के निवारण पर शोध करें।

दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में मौजूद अधिकारीगण।

कार्यशाला में रबी मौसम की फसलों पर निम्न सिफारिशें स्वीकृत की गई

1. आरएच 1424 : राया की यह किस्म जम्मू, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राजस्थान के बारानी क्षेत्रों में समय पर बिजाई के लिए वर्ष 2023 में अनुमोदित की गई है। यह किस्म 137-140 दिनों में पककर तैयार हो जाती है तथा 10.5-11.0 क्विंटल प्रति एकड़ औसत पैदावार देती है। इसकी फलियां लंबी व मोटी होती है व इसके दानों का आकार भी बड़ा होता है। इस किस्म में तेल की औसत मात्रा 40.5 प्रतिशत है।
2. आरएच 1705 : यह विश्वविद्यालय की राया की पहली तेल गुणवत्ता युक्त उन्नत किस्म है, जिसकी वर्ष 2023 में जम्मू, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बिजाई के लिए सिफारिश की गई है। यह किस्म 136-142 दिनों में पक कर 10.5-11.5 क्विंटल प्रति एकड़ औसत पैदावार देती है। इस किस्म के दानों में तेल की औसत मात्रा 38.0 प्रतिशत है।
3. गन्ने की फसल में टॉप बोरर व अर्लीशूट बोरर को नियंत्रित करने वाले कीटनाशक, जिसका नाम पहले राइनास्पिर 20ईसी (कोराजन) से बदलकर क्लोरेन्ट्रानिलिप्रोल 18.5 एस.सी (कोराजन) हो गया है।
4. मक्का की संकर किस्म एच एच एम -1 में मेडिश लीफ ब्लाइट व रतुआ की समस्या बढ़ने से इस किस्म को समग्र सिफारिशों से हटाया गया है, जिससे कि किसान इसको न लगाए।

कृषि संबंधित समस्याओं के निवारण के लिए मोबाइल एप से जुड़ सकेंगे किसान व वैज्ञानिक

अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कुलपति महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल सुधीर राजपाल ने कहा कि किसानों की समस्याओं का जल्दी निवारण होना चाहिए, जिसके लिए कृषि विभाग ऐसी मोबाईल एप विकसित करने में लगा है, जिससे कि किसान जल्दी से वैज्ञानिकों से सीधे तौर पर जुड़कर अपनी समस्याओं का समाधान ले सके। उन्होंने कहा कि इनमें यह एप इस तरह डिजाईन की जाएगी कि जल्दी से किसान जल्दी से समस्या व इससे संबंधित निवारण के लिए वीडियो भी ढूंढ सके। एसीएस ने यह भी सुझाव दिए कि कृषि अधिकारी किसान के खेत पर लगे हुए प्रदर्शन प्लोट्स की विडियो बनाकर भी अन्य किसानों के साथ शेयर करें। उन्होंने गन्ने की अधिक पैदावार देने वाली किस्मों के बारे अधिक जागरूकता फैलाने के साथ ही प्रोत्साहन राशि देकर उनका रकबा बढ़ाने की बात कही।

इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. नरहरि बांगड़, हमेटी के डायरेक्टर डॉ. हरदीप सिंह भी उपस्थित रहे। डॉ. सुनील ढांडा ने इस कार्यशाला में मंच संचालन कर सभी उपस्थित अधिकारियों व वैज्ञानिकों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष न्यूज	02.09.2023	--	--

कम जोत वाले किसानों की समस्याओं को समझकर करें अनुसंधान : प्रो. काम्बोज

हकृवि में दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 3 सितम्बर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज रहे, जबकि विशिष्ट अतिथि अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कुलपति महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल सुधीर राजपाल व महानिदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग डॉ. नरहरि बांगड़ मौजूद रहे। इस कार्यशाला में प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया।

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के तालमेल से ही किसान का भला हो सकता है। हरियाणा एक ऐसा प्रदेश है जहां कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक व प्रदेश के कृषि अधिकारियों की कार्यशाला आयोजित की जाती है जिसमें किसान के खेत में आई समस्या के समाधान के लिए कृषि अधिकारी अपनी बात वैज्ञानिकों के पास लेकर जाते हैं तथा वैज्ञानिक इन समस्याओं के अनुरूप ही अपनी शोध कार्य प्लान करके चलते है ताकि वे समस्या दोबारा न आए व किसान की आमदनी बढ़े। कुलपति ने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे कम जोत के किसानों की समस्या को पहले अच्छे ढंग से समझें, उसके बाद उन समस्या के निवारण पर शोध करें।

इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. नरहरि बांगड़, हमेटी के डायरेक्टर डॉ. हरदीप सिंह भी उपस्थित रहे। डॉ. सुनील ढांडा ने इस कार्यशाला में मंच संचालन कर सभी उपस्थित अधिकारियों व वैज्ञानिकों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस कार्यशाला में रबी मौसम की फसलों पर निम्नलिखित सिफारिशें स्वीकृत की गई

1. आर.एच 1424 : राया की यह किस्म जम्मू, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राजस्थान के बारानी क्षेत्रों में समय पर बिजाई के लिए वर्ष 2023 में अनुमोदित की गई है। यह किस्म 137-140 दिनों में पककर तैयार हो जाती है तथा 10.5-11.0 क्विंटल प्रति एकड़ औसत पैदावार देती है। इसकी फलियां लंबी व मोटी होती है व इसके दानों का आकार भी बड़ा होता है। इस किस्म में तेल की औसत मात्रा 40.5 प्रतिशत है।

2. आर.एच. 1705 : यह विश्वविद्यालय की राया की पहली तेल गुणवत्ता युक्त उन्नत किस्म है, जिसको वर्ष 2023 में जम्मू, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बिजाई के लिए सिफारिश की गई है। यह किस्म 136-142 दिनों में पक कर 10.5-11.5 क्विंटल प्रति एकड़ औसत पैदावार देती है। इस किस्म के दानों में तेल की औसत मात्रा 38.0 प्रतिशत है।

3. गन्ने की फसल में टॉप बोरर व अर्लीशूट बोरर को नियंत्रित करने वाले कीटनाशक, जिसका नाम पहले राइनाक्सिपर 20ईसी (कोराजन) से बदलकर क्लोरन्ट्रानिलिप्रोल 18.5 एस.सी (कोराजन) हो गया है।

4. मक्का की संकर किस्म एच एम -1 में मेडिस लीफ ब्लाइट व तुलासिता की समस्या बढ़ने से इस किस्म को समग्र सिफारिशों से हटाया गया है, जिससे कि किसान इसको न लगाए।

कृषि संबंधित समस्याओं के निवारण के लिए मोबाइल एप से जुड़ सकेंगे किसान व वैज्ञानिक : एसीएस

अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कुलपति महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल सुधीर राजपाल ने कहा कि किसानों की समस्याओं का जल्दी निवारण होना चाहिए, जिसके लिए कृषि विभाग ऐसी मोबाईल एप विकसित करने में लगा है जिससे कि किसान जल्दी से वैज्ञानिकों से सीधे तौर पर जुड़कर अपनी समस्याओं का समाधान ले सकें। उन्होंने कहा कि इसमें यह एप इस तरह डिजाईन की जाएगी कि जल्दी से किसान जल्दी से समस्या व इससे संबंधित निवारण के लिए वीडियो भी ढूंढ सकें। एसीएस ने यह भी सुझाव दिए कि कृषि अधिकारी किसान के खेत पर लगे हुए प्रदर्शन प्लॉट की वीडियो बनाकर भी अन्य किसानों के साथ शेयर करें। उन्होंने गन्ने की अधिक पैदावार देने वाली किस्मों के बारे अधिक जागरूकता फैलाने के साथ ही प्रोत्साहन राशि देकर उनका रकबा बढ़ाने की बात कही।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष न्यूज	02.09.2023	--	--

देश की खाद्य सुरक्षा किसानों के खेत से होकर निकलती है : काम्बोज

एचएयू वैज्ञानिकों एवं प्रदेश के कृषि अधिकारियों की वर्कशॉप, फसलों में नई समग्र सिफारिशों के लिए दो दिन करेंगे मंथन

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 2 सितम्बर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आज से दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का शुभारंभ हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज रहे, जबकि विशिष्ट अतिथि अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कुलपति महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल सुधीर राजपाल व महानिदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग डॉ. नरहरि बांगड़ मौजूद रहे। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि देश की खाद्य सुरक्षा किसानों के खेतों से होकर निकलती है। संसाधान संरक्षण व फसलों की गुणवत्ता आज के मुख्य विषय है। फसलों का चक्र अपनाकर व मोटे अनाज की खेती करके भी संसाधनों का संरक्षण किया जा सकता है। खेती करने की पुराने पद्धतियों को छोड़कर हमें किसानों को मार्केटिंग और एग्री-बिजनेस के लिए प्रेरित करना होगा। उन्होंने युवाओं की कृषि क्षेत्र में कम रूचि को देखकर चिंता भी जताई और उन्होंने युवाओं को आईटी, मोबाइल व ड्रोन जैसी उन्नत तकनीकों का उपयोग कर खेती में योगदान के लिए आह्वान किया। कुलपति ने बीते दो सालों में विभिन्न फसलों की 18 नई किस्में देने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को बधाई भी दी और उन्होंने उन्नत किस्मों के बीज उत्पादन के लिए रोड मेप तैयार करने का भी आह्वान किया। उन्होंने कृषि विभाग, हरियाणा और हकृवि को एक ही धुरी के पहिए बताया, जिनका एकमात्र लक्ष्य किसानों के हित में काम करना है। उन्होंने बताया कि समय-समय पर किसानों को फसलों से संबंधित जानकारी देने के लिए लगातार एडवाइजरी जारी कर रहा है। महानिदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग डॉ. नरहरि बांगड़ ने उन्होंने खेतीबाड़ी को वैज्ञानिक तरीके से करने पर जोर दिया, जिसके लिए हरियाणा सरकार द्वारा मिट्टी जांच प्रयोगशालाएं बढ़ाई गई है, जिसके तहत मिट्टी में आवश्यकता अनुसार संतुलित पोषक तत्वों का उपयोग किया जा सकें। उन्होंने राज्य सरकार की ओर से किसानों के हित में चलाई जा रही विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने कहा कि किसान विश्वविद्यालय से जुड़कर वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों का लाभ उठाए। विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने वर्कशॉप की विस्तृत जानकारी देते हुए निदेशालय द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियां जबकि अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने विश्वविद्यालय में चल रही अनुसंधान परियोजनाओं के बारे में बताया। कृषि विभाग के अतिरिक्त निदेशक(सांख्यिकी)डॉ. आर.एस. सोलंकी ने कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा द्वारा किसानों के हित में चलाई जा रही योजनाओं व उपलब्धियों के बारे में बताया। कार्यशाला में मंच का संचालन डॉ. सुनील ढांडा ने किया, जबकि कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया। इस अवसर पर रबी व खरीफ की सुधार सहित समग्र सिफारिशें नामक पुस्तिका का भी विमोचन किया गया।

कृषि को व्यवसाय के रूप में विकसित करना समय की मांग : एसीएस सुधीर राजपाल

अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कुलपति महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल सुधीर राजपाल ने दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला के पहले दिन अधिकारियों की भारी संख्या में उपस्थिती देखकर बधाई दी। उन्होंने कृषि क्षेत्र में मशीनीकरण और नई तकनीकों को अपनाकर उत्पादकता बढ़ाने को इस संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य बताया। उन्होंने कहा कि समय से पहले योजनाएं बनाकर और खेतीबाड़ी को एग्री-बिजनेस में जोड़कर किसानों की आय को बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने खेतीबाड़ी में आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए वैज्ञानिकों, अधिकारियों और आइटी व कृषि उद्योगों से जुड़े विशेषज्ञों को किसानों के हित के लिए एक साथ आने की जरूरत है। उन्होंने इस बार बाजरे की फसल में आई अमेरिकन सूंडी के प्रकोप की चर्चा की और विश्वविद्यालय से मिले सहयोग के लिए धन्यवाद किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	03-09-23	04	4-6

'स्वाधीनता समर में युवा शक्ति की शौर्य गाथा' विषय पर संगोष्ठी आयोजित

हिसार, 2 सितम्बर (ब्यूरो): पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, हिसार की ओर से 'स्वाधीनता समर में युवा शक्ति की शौर्य गाथा' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता दयानंद महाविद्यालय के इतिहासकार प्रो. महेंद्र सिंह उपस्थित रहे।

मुख्य वक्ता प्रो. महेंद्र सिंह ने संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि विदेशी शक्ति के अनुसार 1757 से 1857 के बीच भारत देश पर कब्जा करने को लेकर कोई भी बड़ा संघर्ष नहीं हुआ, जोकि असत्य धारणा है। जबकि सच यह है कि उस दौर में देश के 283 स्थानों पर विदेशी ताकत के खिलाफ छोटे पैमाने पर बगावत शुरू हुई थी।

उन्होंने बताया कि अकेले हरियाणा में 17 बार विदेशी शक्ति को छोटे स्तर पर चुनौतियां भी दी गई। लेकिन हमारे पूर्वजों ने कम समय में ही समझ लिया कि इस तरह के छोटे स्तर पर लड़ाई लड़ने पर जीत हासिल नहीं की जा सकती। 1757 से 1857 के इस दीर्घकालीन अवधि में विदेशी शक्ति द्वारा जारी शहादतों के आंकड़ों पर नजर डालें तो उस समय 1.80

» हरियाणा ने 17 बार विदेशी शक्तियों को दी थी चुनौतियां

लाख लोग शहीद हुए, जिसमें से साढ़े 24 हजार लोग हरियाणा के थे। उन्होंने कहा कि राष्ट्र के प्रति उस समय 6 लाख से अधिक लोगों ने देश के प्रति कुर्बानियां दी, जिनमें से हरियाणा के 82 हजार लोग शामिल थे, जबकि अकेले हिसार की बात की जाए तो इनमें से 10 हजार लोगों ने उस समय अपनी शहादत दी थी।

मुख्य वक्ता ने बताया कि जब बड़े पैमाने पर पेशावर से संग्राम शुरू हुआ तो सीधे तौर पर 59 जगहों पर लोगों को तोप से उड़ाया गया, जबकि 35 अलग-अलग जगहों पर रोल रोलर से लोगों को कुचला गया। इनमें तोपों से उड़ाने की प्रक्रिया लंबी चली।

इसी कड़ी में हरियाणा में 9 अलग-अलग जगहों पर तोप से लोगों को उड़ाया गया, 16 अलग-अलग जगहों पर रोड रोलर से लोगों को कुचला गया। उन्होंने बताया कि आज हरियाणा में 53 गांव ऐसे है, जिनके नामो-निशान तक नहीं है।

उन्होंने कहा कि 1858 से 1863 तक अंग्रेजी पत्राचार के अनुसार भारत के 1857 के संग्राम को लिखने के लिए 93 लोगों को नियुक्त किया गया, जिन्हें विशेष तौर पर हिदायतें दी गई कि लेख की प्रस्तुतिकरण कुछ तरह से लिखी हो कि जिसमें अंग्रेजों की तोहीन न हो और स्थानीय नागरिक नायक-नायिकाओं के रूप में न उभर पाए।

साथ ही इस लेख के सही विश्लेषण पर लिखने, पढ़ने व समझने के लिए हमारे ऊपर पाबंदियां भी लगा दी गई। अत: विदेशी शक्तियों ने भारत के इतिहास को तोड़-मरोड़कर, तथ्यहीन व गलत आंकड़ों के सहित प्रस्तुत किया है, जबकि सच्चाई इसके विपरीत है।

इस संगोष्ठी का मंच संचालन मोहित कुमार ने किया, जबकि मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस अवसर पर डॉ. जगबीर सिंह, ज्ञानचंद बंसल के अलावा शहर के विभिन्न संस्थानों के गणमान्य व्यक्ति भी शामिल हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	03-09-23	02	3-5

भारत के स्वर्णिम इतिहास को विदेशी ताकतों ने तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया : प्रो. महेंद्र

'स्वाधीनता समर में युवा शक्ति की शौर्य गाथा' विषय पर मुख्य वक्ता ने अनुभव साझा किए

भास्कर न्यूज | हिसार

पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र की ओर से 'स्वाधीनता समर में युवा शक्ति की शौर्य गाथा' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता दयानंद महाविद्यालय के इतिहासकार प्रो. महेंद्र सिंह उपस्थित रहे। प्रो. महेंद्र सिंह ने संबोधित करते हुए कहा कि विदेशी शक्ति के अनुसार 1757 से 1857 के बीच भारत देश पर कब्जा करने को लेकर कोई भी बड़ा संघर्ष नहीं हुआ, जोकि असत्य धारणा है। जबकि सच यह है कि उस दौर में देश के 283 स्थानों पर विदेशी ताकत के खिलाफ छोटे पैमाने पर बगावत शुरू हुई थी। उन्होंने बताया कि अकेले हरियाणा में 17 बार विदेशी शक्ति को छोटे स्तर पर चुनौतियां भी दी गईं। लेकिन हमारे पूर्वजों ने कम समय में ही समझ लिया कि इस तरह के छोटे स्तर पर लड़ाई लड़ने पर जीत हासिल नहीं की जा सकती। 1757 से 1857 के इस दीर्घकालीन अवधि में विदेशी शक्ति द्वारा जारी शहादतों के आंकड़ों पर नजर डालें तो उस समय 1.80 लाख लोग शहीद हुए, जिसमें से साढ़े 24 हजार लोग हरियाणा के थे।

प्रो. महेंद्र सिंह ने कहा कि राष्ट्र के प्रति उस समय 6 लाख से अधिक लोगों ने देश के प्रति कुर्बानियां दी, जिनमें से हरियाणा के 82 हजार लोग शामिल थे, जबकि अकेले हिसार की बात करूं तो इनमें से 10 हजार लोगों ने उस समय अपनी शाहदता दी थी। मुख्य वक्ता ने बताया कि जब बड़े पैमाने पर पेशावर से संग्राम शुरू हुआ तो सीधे तौर पर 59 जगहों पर लोगों को तोप से उड़ाया गया, जबकि 35 अलग-अलग जगहों पर रोल रोलर से लोगों को कुचला गया। इनमें तोपों से उड़ाने की प्रक्रिया लंबी चली। इसी कड़ी में हरियाणा की बात करूं तो 9 अलग-अलग जगहों पर तोप से लोगों को उड़ाया गया, 16 अलग-अलग जगहों पर रोड रोलर से लोगों को कुचला गया। मुख्य वक्ता ने बताया कि आज हरियाणा में 53 गांव ऐसे है, जिनके नामो-निशान तक नहीं है। उन्होंने कहा कि अगर मैं इसी सिक्के के दूसरे पहलू की बात करूं तो 1858 से 1863 तक अंग्रेजी पत्राचार के अनुसार भारत के 1857 के संग्राम को लिखने के लिए 93 लोगों को नियुक्त किया गया, जिन्हें विशेष तौर पर हिदायतें दी गईं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	03-09-23	04	6-8

भारत के स्वर्णिम इतिहास को विदेशी शक्तियों ने तथ्यहीन, गलत आंकड़ों सहित तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया : प्रो. महेंद्र सिंह

हिसार, 2 सितम्बर (विरेन्द्र वर्मा): पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, हिसार की ओर से 'स्वाधीनता समर में युवा शक्ति की शौर्य गाथा' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता दयानंद महाविद्यालय, हिसार, इतिहासकार प्रो. महेंद्र सिंह उपस्थित रहे। मुख्य वक्ता प्रो. महेंद्र सिंह ने संबोधित करते हुए कहा कि विदेशी शक्ति के अनुसार 1757 से 1857 के बीच भारत देश पर कब्जा करने को लेकर कोई भी बड़ा संघर्ष नहीं हुआ, जोकि असत्य धारणा है। जबकि सच यह है कि उस दौर में देश के 283 स्थानों पर विदेशी ताकत के खिलाफ छोटे पैमाने पर बगावत शुरू हुई थी। उन्होंने बताया कि अकेले हरियाणा में 17 बार विदेशी शक्ति को छोटे स्तर पर चुनौतियां भी दी गई। लेकिन हमारे पूर्वजों ने कम समय में ही समझ लिया कि इस तरह के छोटे स्तर पर लड़ाई लड़ने पर जीत हासिल नहीं की जा सकती। 1757 से 1857 के इस दीर्घकालीन अवधि में विदेशी शक्ति द्वारा जारी शहादतों के आंकड़ों पर नजर डालें तो उस समय 1.80 लाख लोग शहीद हुए, जिसमें से साढ़े 24 हजार लोग हरियाणा के थे। उन्होंने कहा कि राष्ट्र के प्रति उस समय 6 लाख से अधिक लोगों ने देश के प्रति कुर्बानियां दी, जिनमें से हरियाणा के 82 हजार लोग शामिल थे, जबकि अकेले हिसार की बात करूं तो इनमें से 10 हजार लोगों ने उस समय अपनी शाहदता दी थी। मुख्य वक्ता ने बताया कि जब बड़े पैमाने पर पेशावर से संग्राम शुरू हुआ तो सीधे तौर पर 59 जगहों पर लोगों को तोप से उड़ाया गया, जबकि 35 अलग-अलग जगहों पर रोल रोलर से लोगों को कुचला गया। इनमें तोपों से उड़ाने की प्रक्रिया लंबी चली। इसी कड़ी में हरियाणा की बात करूं तो 9 अलग-अलग जगहों पर तोप से लोगों को उड़ाया गया, 16 अलग-अलग जगहों पर रोड रोलर से लोगों को कुचला गया। मुख्य वक्ता ने बताया कि आज हरियाणा में 53 गांव ऐसे है, जिनके नामो-निशान तक नहीं है। उन्होंने कहा कि अगर मैं इसी सिक्के के दूसरे पहलू की बात करूं तो 1858 से 1863 तक अंग्रेजी पत्राचार के अनुसार भारत के 1857 के संग्राम को लिखने के लिए 93 लोगों को नियुक्त किया गया, जिन्हें विशेष तौर पर हिदायतें दी गई कि लेख की प्रस्तुतिकरण कुछ तरह से लिखी हो कि जिसमें अंग्रेजों की तोहीन न हो और स्थानीय नागरिक नायक-नायिकाओं के रूप में न उभर पाए। साथ ही इस लेख के सही विश्लेषण पर लिखने, पढ़ने व समझने के लिए हमारे ऊपर पाबंदियां भी लगा दी गई। इस अवसर पर पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, हिसार के अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह, सलाहकार ज्ञानचंद बंसल अन्य सदस्यगण, शहर के विभिन्न संस्थानों के गणमान्य व्यक्ति भी शामिल हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	03-09-23	03	1-2

आजादी के संग्राम में 9 जगह उड़ाया था तोपों से, 16 जगह चले रोड रोलर

हिसार, 2 सितंबर (हप्र)

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जब बड़े पैमाने पर पेशावर से संग्राम शुरू हुआ तो सीधे तौर पर 59 जगहों पर लोगों को तोप से उड़ाया गया जबकि 35 अलग-अलग जगहों पर रोड रोलर से स्वतंत्रता सेनानियों को कुचला गया। इनमें तोपों से उड़ाने की प्रक्रिया लंबी चली। इसी कड़ी में हरियाणा की बात करें तो 9 अलग-अलग जगहों पर तोप से लोगों को उड़ाया गया और 16 अलग-अलग जगहों पर रोड रोलर से लोगों को कुचला गया। आज हरियाणा में 53 गांव ऐसे हैं, जिनका नामो-निशान तक नहीं है। यह बात इतिहासकार प्रो. महेंद्र सिंह ने शनिवार को पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, हिसार की ओर से 'स्वाधीनता समर में युवा शक्ति की शौर्य गाथा' विषय पर आयोजित संगोष्ठी को बतौर मुख्य वक्ता संबोधित करते हुए कही।

उन्होंने बताया कि इतिहास में ऐसा लिखा गया है कि 1757 से 1857 के बीच भारत देश पर कब्जा करने को लेकर कोई भी बड़ा संघर्ष नहीं हुआ, जोकि असत्य है। सच यह है कि उस दौर में देश के 283 स्थानों पर विदेशी ताकत के खिलाफ छोटे पैमाने पर बगावत शुरू हुई थी। अकेले हरियाणा में 17 बार विदेशी शक्ति को छोटे स्तर पर चुनौती दी गई, लेकिन हमारे पूर्वजों ने कम समय में ही समझ लिया कि इस तरह के छोटे स्तर पर लड़ाई लड़ने पर जीत हासिल नहीं की जा सकती। इस संगोष्ठी का मंच संचालन मोहित कुमार ने किया जबकि मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, हिसार के अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह, सलाहकार ज्ञानचंद बंसल अन्य सदस्यगण, शहर के विभिन्न संस्थानों के गणमान्य व्यक्ति भी शामिल हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	02.09.2023	--	--

भारत के स्वर्णिम इतिहास को विदेशी शक्तियों ने तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया : प्रो. महेंद्र

पांच बजे न्यूज

हिसार। पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, हिसार की ओर से 'स्वाधीनता समर में युवा शक्ति की शौर्य गाथा' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता दयानंद महाविद्यालय, हिसार, इतिहासकार प्रो. महेंद्र सिंह उपस्थित रहे।मुख्य वक्ता प्रो. महेंद्र सिंह ने संबोधित करते हुए कहा कि विदेशी शक्ति के अनुसार 1757 से 1857 के बीच भारत देश पर कब्जा करने को लेकर कोई भी बड़ा संघर्ष नहीं हुआ, जोकि असत्य धारणा है। जबकि सच यह है कि उस दौर में देश के 283 स्थानों पर विदेशी ताकत के खिलाफ छोटे पैमाने पर बगावत शुरू हुई थी। उन्होंने बताया कि अकेले हरियाणा में 17 बार विदेशी शक्ति को छोटे स्तर पर चुनौतियां भी दी गई। लेकिन हमारे पूर्वजों ने कम समय में ही समझ लिया कि इस तरह के छोटे स्तर पर लड़ाई लडने पर जीत हासिल नहीं की जा सकती। 1757 से 1857 के इस दीर्घकालीन अवधि में विदेशी शक्ति द्वारा जारी शहादतों के आंकड़ों पर नजर डालें तो उस समय 1.80 लाख लोग शहीद हुए, जिसमें से साढ़े 24 हजार लोग हरियाणा के थे। उन्होंने कहा कि राष्ट्र के प्रति उस समय 6 लाख से अधिक लोगों ने देश के प्रति कुर्बानियां दी, जिनमें से हरियाणा के 82 हजार लोग शामिल थे, जबकि अकेले हिसार की बात करूं तो इनमें से 10 हजार लोगों ने उस समय अपनी शाहदता दी थी। मुख्य वक्ता ने बताया कि जब बड़े पैमाने पर पेशावर से संग्राम शुरू हुआ तो सीधे तौर पर 59 जगहों पर लोगों को तोप से उड़ाया गया, जबकि 35 अलग-अलग जगहों पर रोल रोलर से लोगों को कुचला गया। इनमें तोपों से उड़ाने की प्रक्रिया लंबी चली। इसी कड़ी में हरियाणा की बात करूं तो 9 अलग-अलग जगहों पर तोप से लोगों को उड़ाया गया, 16 अलग-अलग जगहों पर रोड रोलर से लोगों को कुचला गया। मुख्य वक्ता ने बताया कि आज हरियाणा में 53 गांव ऐसे है, जिनके नामो-निशान तक नहीं है। उन्होंने कहा कि अगर मैं इसी सिक्के के दूसरे पहलू की बात करूं तो 1858 से 1863 तक अंग्रेजी पत्राचार के अनुसार भारत के 1857 के संग्राम को लिखने के लिए 93 लोगों को नियुक्त किया गया, जिन्हें विशेष तौर पर हिदायतें दी गई कि लेख की प्रस्तुतिकरण कुछ तरह से लिखी हो कि जिसमें अंग्रेजों की तोहीन न हो और स्थानीय नागरिक नायक-नायिकाओं के रूप में न उभर पाए। अतः विदेश शक्तियों ने भारत के इतिहास को तोड़-मरोड़कर, तथ्यहीन व गलत आंकड़ों के सहित प्रस्तुत किया है, जबकि सच्चाई इसके विपरित है। इस संगोष्ठी का मंच संचालन मोहित कुमार ने किया, जबकि मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर डॉ. जगबीर सिंह, सलाहकार ज्ञानचंद बंसल सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति भी शामिल हुए।